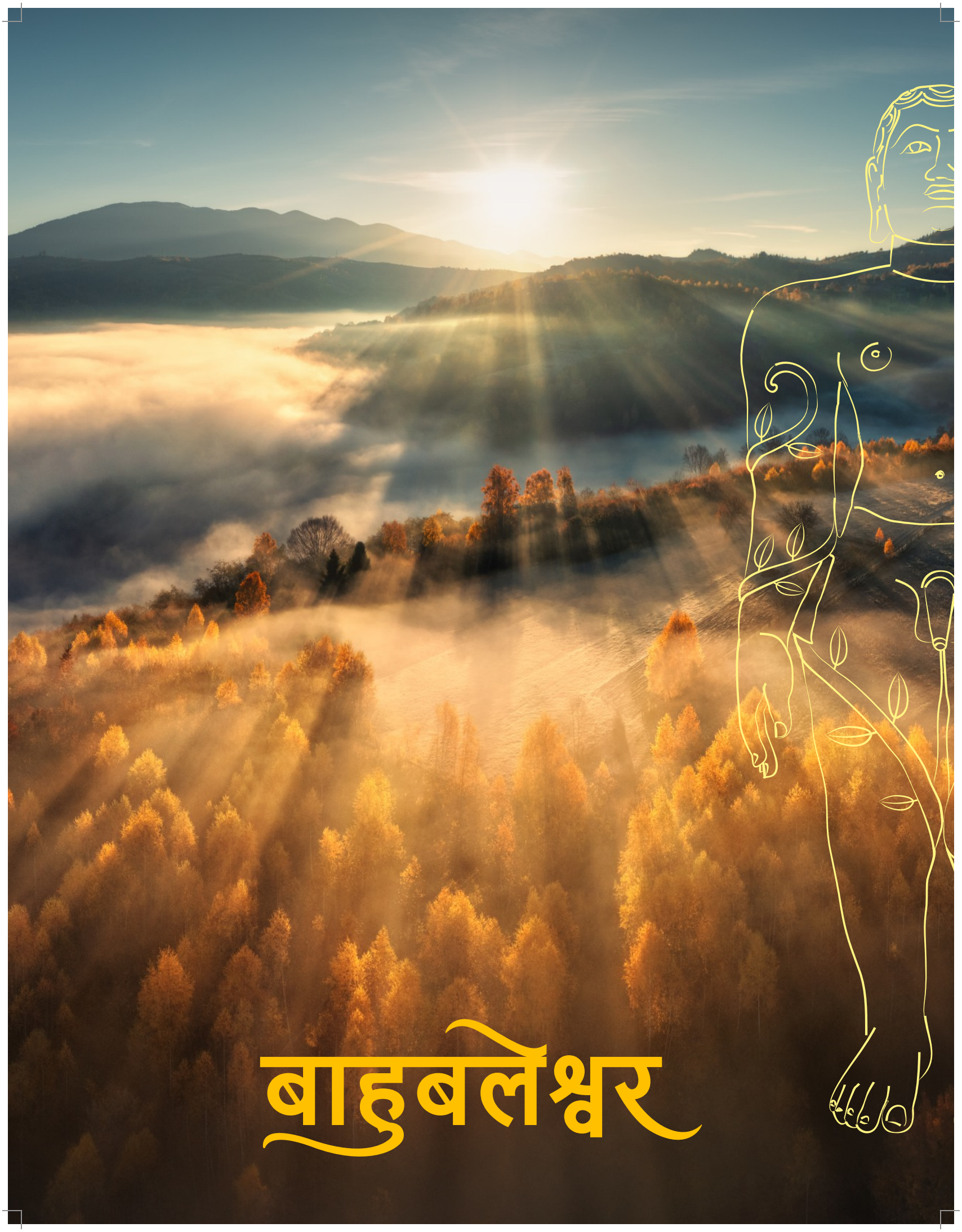
बाहुबलेश्वर

1008 श्री मज्जिनेन्द्र आदिनाथ - बाहुबली जिनविम्ब

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा

एवं महामस्तकाभिषेक महामहोत्सव

21 फरवरी 2025 से 23 फरवरी 2025

स्थान: ग्राम घरभरा, ग्रेटर नोएडा

परम पूज्य सिद्धांत चक्रवर्ती श्वेतपिच्छाचार्य
108 श्री विद्यानंद जी मुनिराज के परम
प्रभावक निर्यापक पट्टाचार्य
108 आचार्य श्री श्रुतसागर जी मुनिराज
के पावन सानिध्य में

परम पूज्य पाठशाला प्रणेता
मुनि श्री अनुमान सागर जी
के पावन सानिध्य में

मुख्य कार्यक्रम

शुक्रवार, 21 फरवरी 2025 — ध्वजारोहण, गर्भ कल्याणक

शनिवार, 22 फरवरी 2025 — जन्म कल्याणक, तप कल्याणक, केवलज्ञान कल्याणक

रविवार, 23 फरवरी 2025 — मोक्ष कल्याणक एवं महामस्तकाभिषेक

निवेदक : श्री 1008 मज्जिनेन्द्र जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति

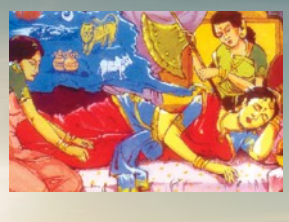
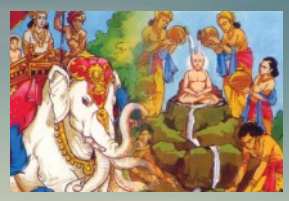

जैन धर्म में तीर्थंकर के जीवन में घटित होने वाली पाँच प्रमुख शुभ घटनाएँ। उन्हें कई जैन अनुष्ठानों और त्योहारों के हिस्से के रूप में मनाया जाता है। जैन ब्रह्माण्ड विज्ञान में, इंद्र दिव्य प्राणी हैं जो स्वर्ग (देवलोक) की अध्यक्षता करते हैं और कल्याणक के दौरान एक महत्वपूर्ण औपचारिक भूमिका निभाते हैं। उनके उत्सव तीर्थंकरों के जीवन के लौकिक महत्व पर जोर देते हैं। पंचकल्याणक के दौरान, भक्त मंच प्रदर्शन, संगीत, नृत्य और पूजा के माध्यम से पांच अभिन्य कल्याणक मनाते हैं।

गर्भ कल्याणक
जब तीर्थंकर की आत्मा उनकी माँ के गर्भ में प्रवेश करती है।

जन्म कल्याणक
तीर्थंकर का जन्म. जन्माभिषेक इस घटना का उत्सव मनाने वाला एक अनुष्ठान है जिसमें इंद्र सुमेरू पर्वत पर तीर्थंकर पर 1008 कलशों (पवित्र पात्रों) से अभिषेक करते हैं।

दीक्षा कल्याणक
जब एक तीर्थंकर सभी सांसारिक संपत्तियों को त्याग देते है और एक तपस्वी बन जाते है

केवलज्ञान कल्याणक
जब एक तीर्थंकर केवलज्ञान (पूर्ण ज्ञान) प्राप्त करते है। सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से समवशरण की रचना होती है, जहाँ से तीर्थंकर उपदेश देते हैं।

निर्वाण कल्याणक
जब कोई तीर्थंकर आठ कर्म का नाश करके, अपना नश्वर शरीर छोड़ते है, तो उसे निर्वाण कहा जाता है। अंतिम मुक्ति, मोक्ष के बाद तीर्थंकर सिद्ध माने जाते है।

भगवान बाहुबली

भगवान बाहुबली जैन धर्म में एक महत्वपूर्ण महापुरष हैं, जो अपने महान आध्यात्मिक समर्पण और सर्वज्ञता (केवल ज्ञान) प्राप्त करने के लिए प्रसिद्ध हैं। वे जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभनाथ के पुत्र और अयोध्या के इक्ष्वाकु वंश के सम्राट भरत के भाई थे।

बाहुबली ने 12 वर्षों तक खड़े होकर स्थिर ध्यान किया, जिसके दौरान उनके पैरों के चारों ओर पौधे उग आए। प्रारंभ में, उन्हें और उनके भाई भरत के बीच शासन को लेकर संघर्ष हुआ। बड़े पैमाने पर हताहतों से बचने के लिए, उन्होंने तीन द्वंद्वों के माध्यम से अपने मतभेदों को सुलझाने का निर्णय लिया: आँख-लड़ाई, पानी-लड़ाई और कुश्ती, जिसमें बाहुबली विजयी रहे।

भरत ने अपनी हार से क्रोधित होकर बाहुबली के विरुद्ध दिव्य हथियार का उपयोग करने का प्रयास किया, जो विफल रहा। इस घटना ने बाहुबली को जवाबी कार्रवाई पर विचार करने के लिए प्रेरित किया, लेकिन अपने ही भाई के खिलाफ हिंसा की निरर्थकता का एहसास होने पर उन्होंने अपना राज्य और सांसारिक संपत्ति त्याग दी और गहरे ध्यान के मार्ग पर चल पड़े। एक वर्ष तक निश्चल खड़े रहने के बाद, भरत उनकी पूजा करने आए, जिससे बाहुबली को अपनी भावनाओं पर काबू पाने में मदद मिली।

बाहुबली के गहन ध्यान ने उन्हें चार प्रकार के शत्रु कर्मों को नष्ट करने और सर्वज्ञता प्राप्त करने में मदद की। अंततः उन्होंने कैलाश पर्वत पर मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त की और एक शुद्ध, मुक्त आत्मा (सिद्ध) बन गए। वे वर्तमान आधे चक्र में मोक्ष प्राप्त करने वाले पहले दिगंबर भिक्षुओं में से एक के रूप में सम्मानित किए जाते हैं।

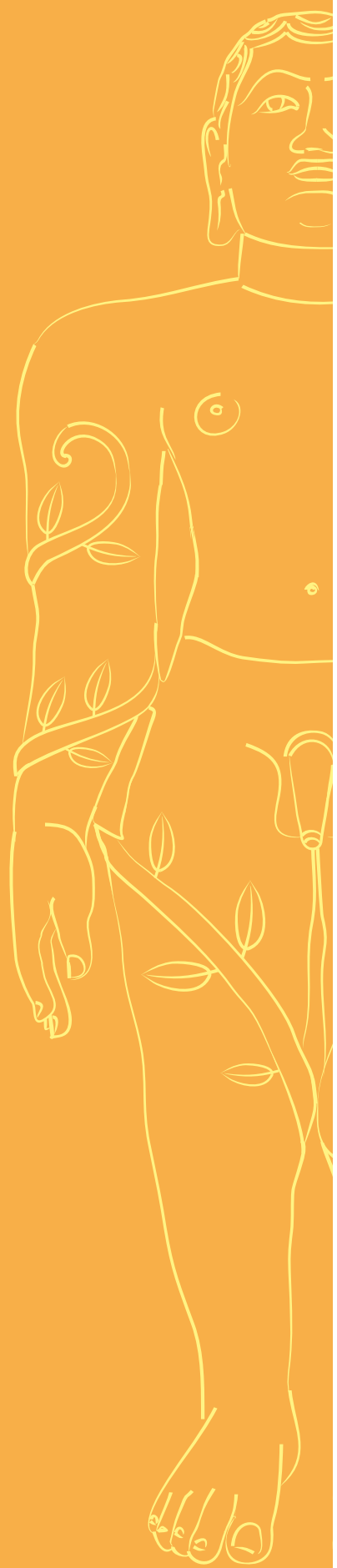

आज के समय में जैन धर्म की प्रासंगिकता

जैन धर्म आज भी महत्वपूर्ण है। इसकी शिक्षाएँ और सिद्धांत हर समय के लिए सही हैं और आज के मुद्दों के लिए भी प्रासंगिक हैं। नई पीढ़ी इससे बहुत कुछ सीख सकती है।

पर्यावरण और पारिस्थितिक संतुलन

जैन धर्म में पर्यावरण संरक्षण और संतुलन पर बहुत जोर दिया गया है। यह धर्म सिखाता है कि मुक्ति और आनंद का मार्ग अहिंसा और त्याग में है। जैन धर्म का मुख्य उद्देश्य ब्रह्मांड के सभी जीवों की भलाई और ब्रह्मांड के स्वास्थ्य की चिंता करना है।

जैन मानते हैं कि जानवरों, पौधों और मनुष्यों में आत्माएं होती हैं। इन आत्माओं को समान रूप से मूल्यवान माना जाता है और इन्हें सम्मान और करुणा के साथ व्यवहार करना चाहिए।

जैन धर्म को एक पारिस्थितिकी धर्म माना जा सकता है, क्योंकि इसने पारिस्थितिकी को आध्यात्मिकता का हिस्सा बना दिया है। इस दृष्टिकोण ने जैनों को पर्यावरण के अनुकूल मूल्य प्रणाली और आचार संहिता स्थापित करने में मदद की है। अपरिग्रह (गैर-स्वामित्व) का सिद्धांत सिखाता है कि व्यक्ति सादा जीवन जिएं और केवल आवश्यक चीजों का उपभोग करें, जो आज की पर्यावरणीय चुनौतियों के लिए प्रासंगिक है।

जैन धर्म की शिक्षाएं और सिद्धांत पर्यावरण संरक्षण और पारिस्थितिक संतुलन को बढ़ावा देते हैं। जैन धर्म का मुख्य सिद्धांत अहिंसा है, जो सभी जीवित प्राणियों पर लागू होता है। यह सिद्धांत जैनों को ऐसा जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है जिससे पर्यावरण और जीवों को कम से कम नुकसान पहुँचे।

शांति और सद्भाव

अहिंसा का सिद्धांत उस दुनिया में शांति और सद्भाव को बढ़ावा देता है, जो अक्सर संघर्ष और हिंसा से प्रभावित होती है। अनेकांतवाद सिखाता है कि हमें दूसरों के विचारों और विश्वासों का सम्मान करना चाहिए।

यह सिद्धांत बताता है कि हम अपने व्यवहार में अहिंसा अपनाकर और दूसरों के विचारों का सम्मान करके शांति और सद्भाव स्थापित कर सकते हैं।

आधुनिक वैज्ञानिक सोच

जैन धर्म में तर्क और दार्शनिक जांच की एक समृद्ध परंपरा है। अनेकांतवाद, या गैर-निरपेक्षता का जैन सिद्धांत, एक परिष्कृत दार्शनिक अवधारणा है जिसकी तुलना आधुनिक वैज्ञानिक सोच से की जा सकती है।

जैन धर्म अनुभवजन्य अवलोकन और तर्कसंगतता पर जोर देता है। इसकी शिक्षाएँ व्यक्तियों को प्रत्यक्ष अनुभव और तार्किक तर्क के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। यह दृष्टिकोण आधुनिक वैज्ञानिक सोच के अनुकूल है।

इसके अलावा, जैन धर्म में व्यक्तिगत जिम्मेदारी और आत्म-सहायता पर जोर दिया गया है। इसकी शिक्षाएँ व्यक्तियों को अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेने और आत्म-सुधार के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करती हैं। यह दृष्टिकोण सशक्त हो सकता है, क्योंकि यह व्यक्तियों को अपने जीवन को नियंत्रित करने और बेहतर बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

प्रेरणा

श्रीमती जया जैन

आरा के प्रसिद्ध देव परिवार (देवाश्रम) की एक समर्पित सदस्या, श्री सुबोध कुमार जैन (आरा) की सुपुत्री और श्री सतेंद्र कुमार जैन, दिल्ली की पत्नी, श्रीमती जया जैन ने उत्तर भारत में जैन धर्म को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका परिवार कई मंदिरों, धर्मार्थ संस्थानों, स्कूलों और जैन अनुसंधान केंद्रों के प्रबंधन में सहायक रहा है।

सूर्य नगर (गाजियाबाद) जैन मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में पांच वर्षों तक सेवा करते हुए, श्रीमती जया जैन ने मंदिर के विकास और परोपकारी गतिविधियों की योजना में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वे जैन धर्म की एक सक्रिय विद्वान हैं और इस विषय पर नियमित रूप से लिखती रहती हैं।

श्री अजय कुमार जैन

श्रीमती जया जैन के छोटे भाई और आरा के राजश्री देव कुमार जैन एवम श्री जैन बाला विश्राम की संस्थापिका, माँ श्री चंदा बाई जी के प्रपोत्र, श्री अजय कुमार जैन ने अपने पिता श्री सुबोध कुमार जैन एवं दादा श्री निर्मल कुमार जैन की धर्म के प्रति रुचि एवम समर्पण विरासत में पाई है। लगभग पच्चीस वर्ष की आयु से ही वे परिवार की सभी धार्मिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं की गतिविधि का संचालन करते आ रहे हैं।

इन्होने जैन समाज के तीर्थों के संरक्षण एवं प्रकाशन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके द्वारा कई लुप्त तीर्थ क्षेत्र प्रकाश में आये हैं। उनकी इस महत्वपूर्ण उपलब्धियो के कारण दक्षिण भारत के सभी भट्टारकों की उपस्तिथि में श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला जी में "समाज रत्न" की उपाधि 2018 में श्री क्षेत्र श्री मांगीतुंगी जी में प्रतिष्ठित "श्री ज्ञानमती माता" पुरस्कार से सम्मानित किये गए है।

वर्तमान में भी वे निम्न संस्थानों से सक्रिय रूप से जुडे हुए हैं और मार्ग दर्शन देते रहते हैं।

जैन तीर्थ क्षेत्र

- श्री सम्मेद शिखर दिगम्बर जैन बीसपंथी कोठी, मधुबन
- उत्तर प्रान्तीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कैमेटी क्षेत्र -कौशाम्बी, चन्द्रावती, भदैनी
- बिहार प्रांतीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कैमेटी क्षेत्र - राजगृह जी, पावापुरी जी, कुंडलपुर जी, गुनावा जी, मंदारगिरि जी, गुलजार बाग जी, जुमई जी, वैशाली जी, नौबतपुर जी, भद्दिलपुर जी, बिहार शरीफ जी, मिथिलापुरी जी

जैन शैक्षणिक संस्थाएं

- श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी
- श्री देव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान, आरा
- श्री जैन बाला विश्राम उच्च विद्यालय, आरा
- श्री बाला विश्राम मध्य विद्यालय, आरा
- श्री जैन कन्या पाठशाला मध्य विद्यालय, आरा
- श्री आदिनाथ नेत्र विहीन विद्यालय, आरा
- श्री आरा मूक वधिर विद्यालय, आरा
- राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन केंद्र, आरा

जैन धार्मिक न्यास

- श्री जैन बाला विश्राम ट्रस्ट, आरा
- श्री श्रेयांश कुवर ट्रस्ट, आरा
- श्री बच्चू लाल ट्रस्ट, आरा
- श्री पारसनाथ ट्रस्ट, आरा
- श्री बाहुबली स्वामी-महावीर स्वामी ट्रस्ट, आरा
- श्री प्रभुदास ट्रस्ट, आरा
- श्री ऋषभ चन्द्र केसरीमल ट्रस्ट, नवादा
- श्री जैन महिला विद्यापीठ, आरा
- श्री भगवान महावीर विकलांग सेवा समिति, पटना

बाहुबलेश्वर उद्देश्य

जैन धर्म में पारिस्थितिक संतुलन और स्थिरता

जैन सिद्धांतों का पालन करते हुए, मंदिर को पर्यावरण संरक्षण का आदर्श केंद्र बनाएं। इससे अनुयायियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता और सम्मान बढ़ेगा, और वे संरक्षण प्रयासों में सक्रिय योगदान कर सकेंगे।

ज्ञान साझा करने की सुविधा

कार्यशालाओं, सेमिनारों और डिजिटल सामग्री जैसे मंच बनाएं। इससे जैन शिक्षाओं की गहरी समझ विकसित होगी और सदस्य अधिक ज्ञानवान और जागरूक बन सकेंगे। यह मंच समुदाय के लिए एक समृद्ध संसाधन बन सकता है।

आधुनिक जीवनशैली में जैन दर्शन का समावेश

जैन सिद्धांतों की प्रासंगिकता को दर्शाएं और लोगों को इन्हें दैनिक जीवन में सामंजस्यपूर्वक शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करें। इससे जीवन संतुलित, पर्यावरण के प्रति संवेदनशील और अहिंसा व अपरिग्रह जैसे सिद्धांतों का पालन करने में मदद मिलेगी।

नई पीढ़ी के लिए आधुनिक शैक्षणिक उपकरण

डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करके आकर्षक और इंटरैक्टिव सीखने के अनुभव विकसित करें, जिससे जैन शिक्षाओं को युवा पीढ़ी के लिए सुलभ और आकर्षक बनाया जा सके। इससे युवाओं में जैन सिद्धांतों की समझ बढ़ेगी और वे इन्हें अपनाने के लिए प्रेरित होंगे।

युवाओं में जैन धरोहर पर गर्व जगाएं

सांस्कृतिक कार्यक्रम, धरोहर यात्राएँ और कहानियों के सत्र आयोजित करें। इससे नई पीढ़ी में गर्व और पहचान की भावना उत्पन्न होगी, और वे अपने जैन धर्म की धरोहर को समझ और संजोने के लिए प्रेरित होंगे।

समुदाय की सेवा और परोपकार को बढ़ावा दें

जैन धर्म के करुणा और अहिंसा के मूल्यों को दर्शाने वाली सामुदायिक सेवा परियोजनाओं को शुरू करें और समर्थन दें। इससे समाज में सकारात्मक योगदान होगा और जैन सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार होगा। साथ ही, समुदाय के सदस्यों के बीच सहानुभूति और सहयोग की भावना विकसित होगी।

इन उद्देश्यों पर ध्यान केंद्रित करके, मंदिर आध्यात्मिक विकास, शिक्षा और सामुदायिक भागीदारी का एक केंद्र बन सकता है, जो पारंपरिक अनुयायियों और आधुनिक पीढ़ी दोनों के साथ मेल खाता है।

बाहुबलेश्वर मंदिर

भगवान बाहुबली की मूर्ति
23 फीट उंची
दुनिया की 30 सबसे ऊंची अखंड प्रतिमाएं में से एक
दक्षिण भारत से स्लेटी ग्रेनाइट
जयपुर में मूर्तिकला

प्लॉट एरिया 2 एकड़
स्थान गांव घरभरा, ग्रेटर नोएडा
जयपुर में मूर्तिकला

बाहुबलेश्वर मंदिर

पर्यावरण एवं पारिस्थितिक संतुलन

जजैन धर्म प्रकृति के सभी तत्वों - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति जीवन के प्रति अहिंसा के माध्यम से पारिस्थितिक संतुलन और पर्यावरण संरक्षण पर जोर देता है। यह सिद्धांत जैनियों को पर्यावरण की रक्षा करने और नुकसान को कम करने के लिए प्रेरित करता है।

जैन धर्मग्रंथ पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण की पुरजोर वकालत करते हैं।

इससे प्रेरित होकर, इस जगह में मिट्टी के घर, तालाब, जंगल, हरित क्षेत्र और सौर प्रकाश व्यवस्था के साथ जैव विविधता, जलवायु नियंत्रण, जल प्रबंधन और टिकाऊ जीवन को बढ़ावा देने वाली एक स्थायी प्रणाली बनाई गई है।

बाहुबलेश्वर मंदिर

आधुनिक, पारिस्थितिक और टिकाऊ वास्तुकला

शंकाकार काले ग्रेनाइट पोडियम के साथ
व्याख्यान और गतिविधियों के लिए
110 लोगों के लिए स्टेडियम में बैठने की व्यवस्था

मियावाकी जंगल

व्यापक हरियाली

तालाब

मिट्टी की कुटिया

बाहुबलेश्वर मंदिर

मियावाकी वन

अकीरा मियावाकी द्वारा विकसित मियावाकी विधि पौधों की देशी प्रजातियों का उपयोग करके तेजी से घने जंगल बनाने की एक तकनीक है। ये वन 2-3 वर्षों में आत्मनिर्भर हो जाते हैं और 20-30 वर्षों में परिपक्व हो जाते हैं, जो प्राकृतिक वनों की तुलना में बहुत तेजी से बढ़ते हैं। वे विभिन्न प्रकार के वन्यजीवों को आकर्षित करते हैं और अन्य वनों की तुलना में 100 गुना अधिक जैव विविधता वाले होते हैं।

हमारे जंगल में, हमने लगभग 5000 पौधे लगाए हैं। 1800 वर्ग मीटर के क्षेत्र में 45 अलग-अलग प्रकार के पेड़ और झाड़ियाँ शामिल हैं।

बेर, चांदनी, कनेर, हिबिस्कस, मेहंदी, सफेद आर्किड, देसी बबूल, हर शिंगार, लेगरस्टोमिया, सिरिस, चंपा, कड़ी पत्ता, जिंझेरी, दूधी, अमरूद, नील गुलमोहर, जंगली अरंड, आम, गूलर, पलाश, करंजा, शहतूत, गुलमोहर, आंवला, जंगल जेलेबी, आइरिस, पुत्रंजीवा, रोंझ, सोंजना, बेल पत्र, पिलखन, बोतल ब्रश, कचनार, कसोड़, अमलतास, नीम, शेम्बल, बकेन, बहेड़ा, तून, जामुन, पीपल, अर्जुन, कदम्ब, इमली

मिट्टी की कुटियाएँ

कोब मड हाउस एक प्रकार का भवन है जिसमें उस भूमि से खोदी गई मिट्टी का उपयोग किया जाता है जहां घर बनाया जाता है। यह मिट्टी स्थानीय रूप से उपलब्ध प्राकृतिक तत्वों जैसे चूना, गाय का गोबर, चावल की भूसी और धान के भूसे से समृद्ध होती है।

तालाब

तालाब में लगभग 1000 किलोलीटर पानी होता है और अतिरिक्त पानी को जमीन में वापस लाने के लिए केंद्र में एक वर्षा जल संचयन प्रणाली बनाई गई है।

जैन धर्म: एक दर्शन

जैन धर्म अपनी आध्यात्मिक विचारधारा और इतिहास का अनुसरण चौबीस तीर्थंकरों (धर्म के सर्वोच्च उपदेशकों) की श्रृंखला के माध्यम से करता है। वर्तमान समय चक्र के पहले तीर्थंकर ऋषभदेव, जिन्हें परंपरा के अनुसार लाखों साल पहले का माना जाता है; तेइसवे तीर्थंकर पार्श्वनाथ, जिन्हें इतिहासकार 9वीं शताब्दी ईसा पूर्व का मानते हैं; और चौबीसवें तीर्थंकर महावीर, जो लगभग 600 ईसा पूर्व हुए थे। जैन धर्म को एक शाश्वत धर्म माना जाता है, जिसमें तीर्थंकर हर समय चक्र के माध्यम से मार्गदर्शन करते हैं।

जैन धर्म को ट्रांसथीस्टिक (न तो थीस्टिक और न ही एथीस्टिक) माना जाता है और यह मानता है कि ब्रह्मांड का निर्माण नहीं हुआ है, और यह हमेशा अस्तित्व में रहेगा। शरीर के साथ पूर्ण ज्ञान प्राप्त आत्माओं को अरिहंत (विजेता) कहा जाता है और शरीर के बिना पूर्ण आत्माओं को सिद्ध (मुक्त आत्माएं) कहा जाता है। केवल मानव शरीर वाली आत्मा ही ज्ञान और मुक्ति प्राप्त कर सकती है। मुक्त आत्माएं सर्वोच्च होती हैं और वे सभी स्वर्गीय, पृथ्वी और नरक के प्राणियों द्वारा पूजा की जाती हैं, जो स्वयं भी मुक्ति प्राप्त करने की आकांक्षा रखते हैं।

जैन दर्शन मुख्य रूप से जीवित प्राणियों की प्रकृति को समझने, इन प्राणियों को कर्म की प्रक्रियाओं द्वारा कैसे बांधा जाता है और कैसे जीवित प्राणियों को मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र (संसार) से मुक्त (मोक्ष) किया जा सकता है, पर केंद्रित है। जैन दर्शन अपने लंबे इतिहास के दौरान अपेक्षाकृत स्थिर रहा है और इसमें कोई बड़ा मौलिक सिद्धांत परिवर्तन नहीं हुआ है।

जैन दर्शन की मुख्य विशेषताओं में से एक इसका द्वैतवादी रूपांतरण है, जो मानता है कि अस्तित्व की दो अलग-अलग श्रेणियाँ होती हैं: जीवित, जागरूक, या संवेदनशील प्राणी (जीव) और निर्जीव या भौतिक संस्थाएं (अजीव)। मन के दर्शन में, मन-शरीर द्वैतवाद का अर्थ यह है कि मानसिक घटनाएं भौतिक नहीं हैं, या कि मन और शरीर अलग और विभाज्य हैं।

जैन धर्म में कोई केंद्रीय विश्वास या सिद्धांत नहीं है। जितने भी रास्ते महासागर की ओर जाते हैं, उतने ही रास्ते ज्ञान की ओर ले जाते हैं। आस्था-केंद्रित धर्मों के विपरीत, जैन धर्म जीवन के सवालों पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है न कि उत्तरों पर। परंपरा विशेष मान्यताओं पर जोर नहीं देती, बल्कि नैतिकता का एक ढांचा प्रदान करती है जिसमें आत्मा को मोक्ष का अपना मार्ग खोजना चाहिए।

जैन धर्म के तीन प्रमुख स्तंभ

अहिंसा	यह सिद्धांत सभी जीवों के प्रति दयालु और हिंसारहित व्यवहार को प्रोत्साहित करता है।
अनेकांतवाद	सत्य के अनेक पहलुओं का सिद्धांत - किसी भी दृष्टिकोण को पूर्ण सत्य के रूप में नहीं देखा जा सकता।
अपरिग्रह	अत्यधिक भौतिक संपत्ति और लालच से बचने का सिद्धांत, जो सरल जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

ज्ञान का महत्त्व

ज्ञान आत्मा का सार है और यह कर्म कणों से ढका हुआ है। आत्मा विभिन्न माध्यमों से ज्ञान प्राप्त करती है और नया ज्ञान उत्पन्न नहीं करती, बल्कि ज्ञान को अस्पष्ट करने वाले कर्म कणों को समाप्त करती है। जैन धर्म के अनुसार, चेतना जीव (आत्मा) का प्रमुख गुण है, जो धारणा और ज्ञान के रूप में प्रकट होता है।

जैन ज्ञान मीमांसा में तीन प्रमुख सिद्धांत शामिल हैं:

अनेकांतवाद	सत्य के अनेक पहलुओं का सिद्धांत।
नयवाद	विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने का सिद्धांत।
स्यादवाद	सशर्त दृष्टिकोण का सिद्धांत।

इन सिद्धांतों के माध्यम से, जैन धर्म जीवन और ज्ञान की बहुआयामी प्रकृति को स्वीकार करता है और आत्मा को मोक्ष का मार्ग खोजने की स्वतंत्रता प्रदान करता है।

अनेकांतवाद

अनेकांतवाद जैन धर्म का एक मौलिक सिद्धांत है, जो गैर-निरपेक्षता या विभिन्न दृष्टिकोणों की स्वीकृति का सिद्धांत है। यह कहता है कि अंतिम सत्य और वास्तविकता जटिल है और इसके कई पहलू हैं। जैन धर्म के अनुसार, कोई भी एकल, विशिष्ट कथन अस्तित्व और अंतिम सत्य की प्रकृति का पूर्ण वर्णन नहीं कर सकता। यह निरपेक्षता का विरोध करता है और सभी कट्टरपंथियों के खिलाफ खड़ा होता है, जिसमें यह दावा भी शामिल है कि केवल जैन धर्म ही सही धार्मिक मार्ग है।

अनेकांतवाद व्यक्तियों को दूसरों के विचारों और विश्वासों का सम्मान करने के लिए प्रोत्साहित करता है, भले ही वे उनके विचारों से भिन्न हों। इससे दूसरों के प्रति अधिक समझ, सहिष्णुता और करुणा पैदा होती है, और यह नकारात्मक विचारों और दूसरों के विचारों, विश्वासों और सोच को बदलने की इच्छा को समाप्त करता है। इसे बौद्धिक अहिंसा या मन की अहिंसा और मन और कर्म की विविधता में अहिंसा के रूप में व्याख्यायित किया जाता है। अनेकांतवाद अहिंसा की ओर ले जाता है।

मध्ययुगीन काल में, जैन धर्म में अधिक विस्तृत तार्किक संरचना और अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए, अनेकांतवाद से स्यादवाद (सशर्त दृष्टिकोण) और नयवाद (आंशिक दृष्टिकोण) जैसी द्वंद्वात्मक अवधारणाएं उत्पन्न हुईं।

नयवाद

नयवाद जैन दर्शन के मुख्य सिद्धांतों में से एक है। वस्तु को एक ही रूप में ग्रहण करने वाले ज्ञान को "नय" कहा जाता है। नय के दो मुख्य भेद हैं - द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक। द्रव्यार्थिक नय तीन प्रकार के होते हैं - नैगम, संग्रह और व्यवहार। पर्यायार्थिक नय चार प्रकार के होते हैं - ऋजुसूत्र, शब्द, समनिरूढ़ और एवंभूत। द्रव्यार्थिक नय वस्तु के सामान्य अंश को ग्रहण करते हैं, जबकि पर्यायार्थिक नय वस्तु के विशेष अंश को ग्रहण करते हैं। नयवाद का मानना है कि सभी दार्शनिक विवाद दृष्टिकोणों के भ्रम से उत्पन्न होते हैं।

स्यादवाद

स्यादवाद "सशर्त भविष्यवाणी का सिद्धांत" है, जो अनेकांतवाद को व्यक्त करता है। इसके अनुसार, हर वाक्यांश या अभिव्यक्ति के पहले "स्याद" ("एक निश्चित अर्थ में") जोड़ा जाता है। यह सिद्धांत कहता है कि किसी भी कथन के सत्य को विभिन्न संदर्भों और दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है।

स्यादवाद के अनुसार, कोई भी सत्य या वास्तविकता एकल दृष्टिकोण से पूरी तरह से समझी नहीं जा सकती। इसलिए, प्रत्येक कथन के पहले "स्याद" शब्द जोड़कर इसे सशर्त दृष्टिकोण दिया जाता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वह कथन केवल एक विशिष्ट दृष्टिकोण से सत्य है।

इस सिद्धांत का उद्देश्य विचारों में कठोरता को समाप्त करना और विचारों की बहुलता को स्वीकार करना है, जो जैन धर्म की अहिंसा की भावना को भी दर्शाता है।

मोक्ष

जैन ग्रंथों के अनुसार, मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त करने के तीन साधन हैं:

सम्यक दृष्टि
सम्यक ज्ञान
सम्यक आचरण सम्यक चरित्र

सम्यक दृष्टि

सही दृष्टि को "तत्त्वों (पदार्थों, वास्तविकताओं) के सही ज्ञान पर आधारित देखना" के रूप में परिभाषित किया गया है। सही दृष्टि सही ज्ञान से प्राप्त होती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि आप जो सुनते हैं उस पर विश्वास करें, बल्कि इसका अर्थ है चीजों को सही ढंग से देखना (सुनना, महसूस करना आदि) और स्पष्ट रूप से देखने में बाधा डालने वाले पूर्वाग्रहों और अंधविश्वासों से बचना।

सम्यक ज्ञान

सही ज्ञान को "जैसा कि वे वास्तव में हैं (अर्थ) जीवों (जीवों) जैसे तत्त्वों को जानना" के रूप में परिभाषित किया गया है। इसका अर्थ है वास्तविक ब्रह्मांड का सही और पर्याप्त ज्ञान होना - इसके लिए ब्रह्मांड के पांच (या छह) पदार्थों और नौ सच्चाइयों का सही ज्ञान आवश्यक है - और उस ज्ञान को सही मानसिक दृष्टिकोण के साथ रखना।

केवल ज्ञान	(सर्वज्ञता)
मति ज्ञान	(संवेदी ज्ञान)
श्रुत ज्ञान	(शास्त्रीय ज्ञान)
अवधी ज्ञान	(अलौकिक दृष्टि)
मनः प्रयाय ज्ञान	(दूरानुभव या टेलीपैथी)

सही ज्ञान के तीन विश्वसनीय साधन हैं।

प्रत्यक्ष	(अनुभूति)
अनुमान	(विचार)
शब्द	(शास्त्र का शब्द)

सही आचरण

सही आचरण का अर्थ है आसक्ति और अन्य अपवित्र दृष्टिकोणों और विचारों से स्वयं को मुक्त करना। "यदि हमारा चरित्र दोषपूर्ण है और हमारी अंतरात्मा स्पष्ट नहीं है, तो केवल ज्ञान से हमें संतुलन और सुख प्राप्त करने में मदद नहीं मिलेगी।" सही विश्वास और सही ज्ञान रखने वाला व्यक्ति सही आचरण प्राप्त करने के लिए प्रेरित और सक्षम होगा।

बाहुबलेश्वर

ग्राम घरभरा, ग्रेटर नोएडा

www.bahubaleshwar.com

bahubaleshwar@gmail.com